पानी !!

उस्मान बेग



पानी

उस्मान बेग

टाइम्स पब्लिकेशन्स

पानी

प्रथम संस्करण - जुलाई 2009

Published by :

adi

Alternative Development Initiatives
2920, Sector 42-C, Chandigarh

Correspondence Address :
1129, Sector 34-C, Chandigarh
Phone/Fax : 91 172 5089829 (M) 94172-46689, 98155-46689
E-mail: contact@adi-international.org

Cover Design :
Prof. Bharat Bhushan Bharti

Printed by :
TIMES PUBLICATIONS
Hoshiarpur (Punjab) India.
Ph.: 098880-33233, 094171-34884, Fax : 01882-223484
E-mail: hoshiarpurtimes@gmail.com

Rs. 50/-

प्राक्कथन

प्रकृति ने इस संसार में जीवन के पनपने के लिए समुचित व्यवस्था की है- जीवन के लिए आवश्यक तत्व हवा, पानी, भूमि वनस्पति और जीवों के पनपने के लिए पुन: जीवन चक्र की रचना की है। दुर्भाग्य से इन वरदानों को भोगने वाला और अपने आपको सबसे अक्लमंद कहलाने वाला जीव इंसान इसे जानते हुए भी इनका शोषण अपने निहित स्वार्थ, अधिक से अधिक भोगने की लालसा, लालच और दिखावे की प्रतिस्पर्धा में जीवन के मौलिक तत्वों को नष्ट करता जा रहा है। परिणाम है कि आज आशंका जताई जा रही है कि शायद कुछ वर्षों में इस जीवन दायिनी धरती से यह जीवन तत्व लुप्त हो जाएंगे।

'जल जीवन का मुख्य स्त्रोत है, हमारे शरीर का सत्तर प्रतिशत भाग जल ही है- जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।'

जल जीवन का मुख्य स्त्रोत है, हमारे शरीर का सत्तर प्रतिशत भाग जल ही है- जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पिछली शताब्दी में औद्योगिक प्रगति के साथ जहां जीवन को आसान और सुखमय बनाने के साधन विकसित किए गए, औद्योगिकी के प्रयोग से सूखे प्रदेशों में भी जल सुलभ करवाया गया, वहीं इसके जीवन चक्र-आवर्त्तन की पूरी तरह अवहेलना की गई। इस जीवन अमृत में कारखानों से निकला विष मिलाया गया। अपने शरीर और घरों से निकली गंदगी जीवन दायिनी नदियों में उँडेली गई और आज हम साफ पानी के लिए तरस रहे हैं। यह कमी आने वाली तबाही का संकेत है। अगर हम आज भी नहीं रुके तो आने

इस जीवन अमृत में कारखानों से निकला विष मिलाया गया। अपने शरीर और घरों से निकली गंदगी जीवन दायिनी नदियों में उँडेली गई और आज हम साफ पानी के लिए तरस रहे हैं। यह कमी आने वाली तबाही का संकेत है।

वाली पीढ़ी के लिए हम एक वीरान, सूखा और जीवन हीन ग्रह ही छोड़ कर जाएंगे।

उस्मान भाई ने इस शाश्वत सत्य का निरूपण मौलिक भावना में अभिव्यक्त किया। एक सरस और सादी भाषा में। एक बच्चे की-सी सरलता में उनके भाव एक झरने की तरह बह निकले हैं। कभी पानी के लिए 'आबे-हयात' 'ख्वाज़ा' नाम से नवाज़ा जाता था, जल देवता था 'वरूण' था जिसके स्पर्श मात्र से उस खुदा उस परमात्मा का आभास होता है। हम भूल गए उस दैविक वरदान को-भौतिकता के युग में जल केवल एक उपभोग की वस्तु बन कर रह गया। जो अब खत्म होने के कगार पर है-

उस्मान की कविता एक 'अज़ान' है उस खुदा की रहमत के सामने सर झुकाने की, उस परम तत्व को समझने के लिए एक ब्रह्मसूत्र-इस साहित्यिक रचना को साहित्य आलोचना के सिद्धांतों पर नहीं तोला जा सकता। कविता का धर्म भावना है मन से निकली सत्य की गूंज।

जल के प्रति आज इसी प्रयास की आवश्यकता है कि हर बूंद को चरणामृत की तरह पवित्र मान कर संरक्षित किया जाए और प्राकृतिक नवजीवन चक्र को चलने में बाधा न पहुंचाई जाए।

आशा है इस शाश्वत सत्य को कविता के रूप में मानस तक पहुंचाने और हर बूंद को सुरक्षित करने का उस्मान भाई का आह्वान जल संरक्षण को केवल एक प्रयास न बना कर एक पवित्र कर्त्तव्य के रूप में स्थापित कर पाएगा।

adi

Alternative Development Initiatives

अल्टरनेटीव्ह डेव्हलपमेंट इनिशिएटीव्हज़्
(ए.डी.आई.)

भूमि, जल, आकाश, वायु और सूर्य इनको भारतीय संस्कृति ने 'पंचमहाभूतों' के नाम से पुकारा है। पर्यावरण संरक्षण, जल व भूमि संवर्धन को प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता ने अपनाया हुआ है। हमारे पास इन विषयों का अपार ज्ञान भंडार है। लेकिन इस पारंपारिक ज्ञान की आज उपेक्षा हो रही है। उसको हम नजरअंदाज करते जा रहे हैं।

इसी उपेक्षा के कारण भूमि के पेट से जल (भूजल) निकास हद से ज्यादा हो रहा है। विकास की तेज रफ्तार में हजारों प्रकार के वनस्पती, प्राणी नष्ट हो रहे हैं। मानव सभ्यता को जिंदा रखने के लिए हमें जल, जंगल, जमीन और जानवर इन सभी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, संवर्धन और विकास करने को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। दुनिया भर में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के काफी प्रयास चल रहे है, इस कार्य की तुलना में प्रकृति का विनाश बहुत ज्यादा है।

ए.डी.आई. ने मानव समाज की भलाई के लिए प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन कार्य को बढ़ावा देने का संकल्प किया है। इस कार्य में सरकार, उद्योग जगत्, वित्तीय संस्थान, सेवाभावी संस्था तथा समाज के साथ सांझेदारी में ए.डी.आई. का कार्य चल रहा है। पर्यावरण प्रबंधन के बारे में जनजागृति, क्षमता वर्धन, नियोजन, अभ्यास, संशोधन और कार्यान्वयन में ए.डी.आई. महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भविष्य में पर्यावरण प्रबंधन के लिए उचित व्यवस्था खड़ी करने के लिए रचनात्मक, वित्तीय एवं संस्थात्मक ढांचा विकसित करने के लिए ए.डी.आई. प्रयत्नरत है।

इसी कोशिश में वर्षा, जल प्रबंधन में यह संस्था काम कर रही है। उस्मान बेग जो इस कार्य में ज़मीनी स्तर पर कार्यरत हैं, उनकी कविता रुपी भावनाओं को सभी पर्यावरण प्रेमियों तक पहुंचाने के उद्देश्य से ए.डी.आई. ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है।

दो शब्द

मेरे स्वर्गीय पिता जी, हबीब बेग और माँ- जैतून बी दोनों खेतिहर मजदूर थे। भूख, गरीबी और समाज के बहुतांश लोगों से मिलने वाली उपेक्षा उनकी और मेरी ज़िन्दगी का अहम हिस्सा रहे हैं। इसलिए जो गिने-चुने लोग हम से प्यार, इन्सानियत और हमदर्दी दिखाते उनके लिए 'कृतज्ञता' हमारे दिलो-दिमाग में सब से ऊंचा स्थान रखती है। इन्सानियत सब से ऊंचा धर्म है और 'इन्सान' बने रहना हमारे जीवन का मूल्य है, यही बात मेरे माता-पिता ने सिखायी। सूरज की रौशनी, ठंडी हवा का झोंका, बारिश की बूंदें, खेत की माटी, कुदरती करिश्मे कभी भेद-भाव नहीं सिखाते, यही बात माँ-बाप ने मुझे लगातार सिखायी। यही सब प्राकृतिक संसाधन हैं और प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए जीना ही जीवन है, यही बात मैंने सीखी।

वक्त ने मुझे प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन कार्य करने हेतु सारे देश की सैर करवाई। मेरे दोस्त राजिन्दर निज्जर, प्रकाश सिरसाट, भीमराव जाधव ने मेरी सृजनशीलता को देखा-समझा-परखा और बढ़ावा दिया। इसी कारण इन कविताओं का जन्म हुआ। मैं तो साहित्य और कविता के बारे में एक अनाड़ी हूं। फिर भी राजिन्दर निज्जर ने 'अल्टरनेटव्ह डेव्हलोपमेंट इनिशिएटव्हज (ए.डी.आई.)' के द्वारा मुझे प्रोत्साहित किया और इस पुस्तक को छपवाने में पूरा सहयोग दिया। होशियारपुर में डॉ. अनिल, डॉ. विकास सूद (हकीम साहिब) प्रोफेसर भारतभूषण जी और टाइम्स पब्लिकेशन्स प्रैस के सभी लोगों ने मेरे साथ रात-दिन बैठकर हर अक्षर को बार-बार पढ़कर आवश्यक सुझाव देकर इन कविताओं का रूप निखारा। प्रो. भारतभूषण ने इस पुस्तक के चेहरे को अपनी चित्रकारी की सृजनशीलता से सजाया। ए.डी.आई. परिवार के हर सदस्य ने इसको मेरे घर पहुंचाने तक हर कदम पर सहयोग दिया।

मेरे जीवन को आकार देने वाले प्रवीण महाजन सर, उषा दीदी, बैरिस्टर जवाहर गांधी, विजय अण्णा बोराडे, युगंधर मांडवकर, क्रिस्पिनो जी लोबो,

डॉ. मार्सेल्ला डिसुझा, डॉ. व्यंकटेश तगत इन सब ने मेरी इस कोशिश को सराहा।

मेरी जीवनसाथी 'फरीदा' ने इस सृजन कार्य में बाधा न पड़े, इसलिए मुझे पारिवारिक उलझनों से बिल्कुल दूर रखा।

इन सब लोगों का मैं सदा ऋणी रहूंगा। पाठकों से निवेदन है कि मेरी कमियों को, गलतियों को उजागर करें ताकि मैं अपने लेखन को सुधार पाऊं।

धन्यवाद।

-उस्मान बेग

उस्मान बेग
प्लाट नं. 9, फैज़ नगर बेरीबाग, निकट हरसूल टी-प्वायंट
औरंगाबाद - 431 119 (महाराष्ट्र)
फोन : 94039 10090, 98909 87080

माता-पिता

और

मानवता को सादर समर्पित

सृष्टि की रचना से पहले,
ईश्वर ने बरसाया पानी।
बरखा, बादल, ओले, कोहरा
रूप कई ले आया पानी।।
सात रंग के इंद्रधनु में
किरणों के संग बिखरा पानी।
सूरज की गर्मी से तप कर
जलते-जलते निखरा पानी।।

रंग-बिरंगे फूल खिले हैं

मधुवन सारा सींचे पानी।

कुहू-कुहू कोयलिया गाये,

साज भी पानी, सुर भी पानी।।

मधु मक्खी ने मधुरस ढूंढा

साथ शहद के आया पानी।

खुशबू फैली संग हवा के

ठंडक लेकर आया पानी।।

प्यासे का रखवाला पानी,
अमृत पानी, हाला पानी।
रंग सभी रंगीला पानी,
काला , उजला, नीला, पानी।।
तड़प प्यास की बढ़ जाये तो
अमृत फिर बन जाए पानी
स्वागत की है रीत पुरानी
पेश करो, एक प्याला पानी।।

साथ हवा के बादल बनकर,

धरती पर फिर बरसे पानी।

माटी के कण-कण से मिलकर

पत्थर में भी पहुंचे पानी।।

पर्वत के सीने से झरना,

झरने में फिर झिल-मिल पानी।

आसमान को छूकर उतरा

सागर तल तक पहुंचा पानी।।

मेहनत हो जब धूप ताप में,
बहा पसीना बनकर पानी।
दिल को जब भी ठेस लगी तो,
आँखों में भर आया पानी।।
कभी ज़रा-सी चोट लगी तो
खून भी निकला, निकला पानी।
सर्दी, खांसी, बीमारी से
नाक-मुंह से निकला पानी।।

सात सुरों की तान में पानी

मंतर में, आज़ान में पानी।

खेतों में खलिहान में पानी

जंगल में, मैदान में, पानी।।

झरने में, सागर में, पानी,

छोटी-सी गागर में, पानी।

ममता के आँचल में पानी

नटखट की हलचल में पानी।।

कुदरत की अनमोल देन है,

अंबर, सूरज, माटी, पानी।

रंग-बिरंगे फूल और कलियां

मधुर फलों का रस भी पानी।।

माटी में जो बीज दबा था

हुआ अंकुरित, पीकर पानी।

सारी धरती बनी है दुलहन

बन आभूषण बरसा पानी।।

सागर से उड़ नील गगन में
संग हवा के गाता पानी।
बादल में लहराता पानी
फिर वापिस आ जाता पानी।।
धूप-छांव का रूप अनोखा,
दुनिया को दिखलाता पानी।
नदी, समंदर और झरनों को
पल भर में भर जाता पानी।।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में
पूजा पाठ का सार है पानी।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
हर इक शख़्स का प्यार है पानी।।
चोर, लड़ाकू, सज्जन, दुर्जन
भेद नहीं करता है पानी।
माटी का, सोने-चांदी का,
हर बर्तन भरता है पानी।।

ऊंचे पर्वत की चोटी का,
ताज बना बर्फीला पानी।
सागर की गहराई का भी
भेद है, गहरा नीला पानी।।
कहां से आयी, पवन दीवानी?
और कहां से लाई पानी?
जड़ें पेड़ की कहां छिपी हैं?
कहां उन्होंने पाया पानी?

‘गंगाजल’ या ‘आबे ज़मज़म’

नाम अलग है, एक है पानी।

तीर्थस्थान हो किसी धर्म का,

वहां मिले पत्थर या पानी।।

तन और मन के मैल को धोये

जग से पाप मिटाये पानी।

चिंता, गुस्सा और बीमारी,

सारे ताप हटाये पानी।।

पंडित हारे ढूंढ के पोथी
और कहीं न पाये पानी।
कोई दीवाना खाक ही छाने,
और चिल्लाये 'पानी, पानी'।।
कोई किनारे खड़ा रहे, और
पूछे कितना, गहरा पानी?
कोई लगा दे जान की बाज़ी
और दिखा दे उसको पानी।।

पहले-पहले रेल चली तो,
इंजन में थी भाप और पानी।
कहीं उड़ा जब उड़न खटोला,
उसमें भी था थोड़ा पानी।।
समुद्रतल में पनडुब्बी को,
राह सही दिखलाये पानी।
गाड़ी कोई चले सड़क पर,
उसको ठंडा राखे पानी।।

मन मौजी जब चहक उठा तो
खुशी के आंसू बना है पानी।
होंठ खुशी के गीत सुनाये
बोल हुए सब पानी-पानी।।
झनक-झनक बाजे पायलिया
सावन लेकर आया पानी।
खिली तबियत, राहत पायी
दौर नया ले आया पानी।।

प्रीतम जब परदेस गये तो
भीगे नैना, रूठा पानी।
बिरहन के मन आग लगी तो,
उसे रिझाये, झूठा पानी।।
गीत सुनाये, नाच नचाये
मन बहकाये खोटा पानी।
थक कर गोरी सो जाये तो
ख़्वाब दिखाये झूठा पानी।।

सत्य, शिव और सुंदरता के,
तत्वों का आधार है पानी।
स्वर्ग–नरक की हर रचना का,
सृष्टि का शृंगार है पानी।।
अविचल, अविरत बहने वाली
नटखट–सी इक धार है पानी।
इस धरती पर बसने वाले
जीवों का आधार है पानी।।

गंगा, जमुना, गोदा, कृष्णा,
सरिता मय संसार है पानी।
बूंद-बूंद से बना समंदर,
वसुधा का आधार है पानी।।
इंद्रधनु के सात रंग से,
सगुण और साकार है पानी।
रूप हवा का जब ले लेगा
निर्गुण निराकार है पानी।।

कान्हा की जब बजी बांसुरी

राधा हो गई पानी–पानी।

मीरा रानी प्रेम दीवानी

छलके आंसू, बरसा पानी।।

सूरदास ने साज़ सजाये

प्रभु मिलन को तरसा पानी।

तड़प उठी जब कोई बिरहन

रोते-रोते छलका पानी।।

किसान भाई जब सींचे खेती,
उसको गीत सुनाये पानी।
एक बीज धरती में बोया
लाखों बीज बनाये पानी।।
भूख मिटी सारी दुनिया से
प्यास बुझाये सब की पानी।
मानवता की करे हिफ़ाज़त
सूरज, धरती, माटी, पानी।।

गेंदा, जूही और चमेली,

महक अलग है, एक है पानी।

कड़ू करेला, आम है मीठा

लज्ज़त न्यारी, एक है पानी।।

दूध भी पानी शहद भी पानी

ज़हर भी पानी, दवा भी पानी।

खट्टा, मीठा रस भी पानी

गोबर भी, गोरस भी पानी।।

मानव की जब बढ़ी लालसा,

उसने छीना सब का पानी।

जात पंथ का भेद बढ़ाया

धरती बांटी, बांटा पानी।।

जंगल काटा, महल बनाये

मार दिये सब पंछी, प्राणी।

अब आपस में जंग छिड़ी है

कैसे लूटें ? किस का पानी।।

सूख गयी सब ताल तलैयां
अब आया मुश्किल में पानी।
थोड़े दिन अब शेष बचे हैं,
फिर होगा सपने में पानी।।
बिना आग के लोग जलेंगे
चिल्लाएंगे पानी–पानी।
तड़प–तड़प कर मर जाएंगे
लेकिन कहीं न होगा पानी।।

कहां है दादी मां के किस्से?
कहां गये सब, राजा-रानी?
उजड़ गये सब महल-मिनारे
उतर गया खँजर से पानी।
जहां सजी थी कल तक महफ़िल
आज वहीं पर है वीरानी।
जहां हुए थे चिराग़ रोशन
आज वहाँ है काला पानी।।

सब रंगों में घुल जाता है
फिर भी है बे–रंगा पानी।
जीवन सब का सदा सजाये,
सब को रखे 'चंगा' पानी।।
कभी शहर में नाकाबंदी
और करवाये 'दंगा' पानी।
दुनिया खून के आंसू रोये
जब हो जाये नंगा पानी॥

सुबह हुई और सूरज निकले
बादल में छिप जाये पानी।
रात में चंदा, तारे निकले
कोहरा बन कर छाए पानी।।
डाल-डाल में, पात-पात में
नयी चेतना लाये पानी।
हर पल अपना रूप बदलकर
आये पानी, जाये पानी।।

आदम की औलाद कहां है?

जिसकी आँखों में था पानी।

मानवता का वृक्ष कहां है?

जिसकी शाखों में था पानी।।

धरती के वो लाल कहां हैं?

जिनकी बांहों में था, पानी।

दुनिया के अलमस्त कहां हैं?

जिन की राहों में था, पानी।।

उम्र कभी मेरी ढल जाए,
ताकत मुझको देगा पानी।
कभी बिमारी मुझे रुलाए,
मेरी खबर भी लेगा पानी।।
मुसीबतों के पहाड़ टूटे,
साथ में मेरे होगा पानी।
मौत मुझे जब गले लगाये,
मेरे साथ चलेगा पानी।।

शब्द भी पानी, अक्षर भी पानी,
ग्रंथों के अंबार भी पानी।
सरगम की झंकार भी पानी,
खुदा की जयजयकार भी पानी।।
बोझिल मन का भार भी पानी,
उलझन की भरमार भी पानी।
रातों का अंधियार भी पानी,
दो मौजों का प्यार भी पानी।।

पहाड़ नंगा, नंगी धरती

कहां गया झरनों से पानी?

कागज़ के सब फूल खिले हैं,

सूख गया नदियों से पानी।।

कवि कलंदर करे कविता

मन में है एहसास का पानी।

धूमिल हो गयी सारी आशा

नहीं है रहा अब सांस का पानी।।

कोई नबी या कोई पैगम्बर
कभी नहीं भूला था पानी।
सारे जग को राह दिखायी
हर दम साथ चला था पानी।।
स्वर्ग बनी थी सारी दुनिया
अमृत से आला था पानी।
रंज रश्क का नाम नहीं था
निर्मल और भोला था पानी।।

जन्नत से प्यारी है धरती

इस धरती का प्यार है पानी।

मानव इस बगिया का माली

हम सब का अधिकार है पानी।।

नया दौर है, नयी सभ्यता

मानवता का यार है पानी।

निर्भय निर्मल मेरी कहानी

सारी कथा का सार है पानी।।

बूंद-बूंद से बरसा पानी
धारा बनकर फिसला पानी।
घाट-घाट से चलते-चलते
बना समंदर उछला पानी।।
मिला कोई अड़ियल-सा पत्थर
दिशा बदलकर निकला पानी।
सीधी राह मिली जब कोई
और खुशी से उछला पानी।।

हर प्यासे की जान बचाई
सब का जीवन दाता पानी।
जान बचाकर आन बचाई
तृष्णा पानी, त्राता पानी।।
चला सभी को साथ में लेकर
गर्व कभी न करता पानी।
राजा हो या रंक सभी की
हर दम रक्षा करता पानी।।

श्रद्धा अपरमपार है पानी
नन्हीं-सी एक धार है पानी।
गीतों की ललकार है पानी
समता की यलगार है पानी।।
मुल्कों में दीवार है पानी
ज़ुल्फों में अंगार है पानी।
सेहत का भंडार है पानी
और उल्फत का यार है पानी।।

पाप हमारे धोते-धोते
हो जाता है गंदा पानी।
कभी-कभी गुस्से में आकर
हो जाता है अंधा पानी।।
कहीं पे सूखा, कहीं सुनामी
करवाता है चंदा पानी।
कभी गले का हार बने और
कभी गले का फंदा पानी।।

पीए शराबी मय का प्याला
आधी हाला, आधा पानी।
शायर कोई ग़ज़ल सुनाये
उलझी बातें, सादा पानी।।
नशा चढ़ायें, मन भरमाएं
मदिरा थोड़ी, ज्यादा पानी।
आज भी पी है, कल पियेंगे
यूं करवाये वादा पानी।।

क्रोध हटाओ, भेद मिटाओ
सीख यही सिखलाए पानी।
प्यार से सब को गले लगाओ
बात यही दोहराए पानी।।
ऊंचा नीचा कोई नहीं है
बार-बार समझाये पानी।
'जीओ और जीने दो' का
गीत सदा ही गाये पानी।।

कबीर, नानक और गौतम ने
हमें पिलाया प्यार का पानी।।
सच्चाई का दीप जलाया
हमें दिया अधिकार का पानी।।
नफ़रत हारी, उल्फ़त जीती
सब को भाया, प्यार का पानी।।
बूँद-बूँद से बटी मोहब्बत,
मानवता के यार का पानी।।

रूप नहीं, आकार नहीं है
सब के साथ समाया पानी।
ठंड में खुद ही ठिठुर गया
और गर्मी से गरमाया पानी।।
नाच नचाया, मन बहलाया
और थोड़ा मुस्काया पानी।
नज़रों से जब नज़र मिली तो,
घबराया, शरमाया पानी।।

मेरा मन है मैली चादर
जिसको धोये ज्ञान का पानी।
गर्व चढ़ा जब मन में मेरे
समझाये ईमान का पानी।।
मन की कश्ती खाए झकोला
जब पाया सम्मान का पानी।
रोते-रोते मन मुरझाया
ज्ञात हुआ ईमान का पानी।।

मरघट में भी दीवानों के
साथ में होगा चंचल पानी।
वहां चिता में हम भी जलेंगे
साथ जलेगा अविचल पानी।।
रात में जब खामोशी होगी
बहता होगा कल कल पानी।
चाँद और तारे झूम उठेंगे
रह जाएगा निश्चल पानी।।

योगी, त्यागी, रोगी, भोगी
सब का साथ निभाये पानी।
बकरी को और शेर, बाघ को
एक ही घाट पिलाये पानी।।
देश, काल की सीमाओं में,
कभी नहीं बंध पाये पानी।
आज़ादी की आशा मन में
हर इक बार जगाए पानी।।

जहाँ हो सके वहीं सम्हालो
जमा करो बरसात का पानी।
छत पे रोको, खेत में रोको,
दिन का भी और, रात का पानी।।
सोच समझकर फेंको, झोंको
इक-इक बूंद बचाओ पानी।
बार-बार तुम सब को टोको,
खुद भी बचो, बचाओ पानी।।

ज़ाहिद कोई रोज़ा रखे,

दिन भर वो ठुकराये पानी।

शाम ढली और सूरज डूबे,

ज़िक्र खुदा का लाये पानी।।

पांच वक्त की करे इबादत,

वजु वहां बन जाए पानी।

गुनाह पाप जब याद आये तो,

आंसू से मुंह धोये पानी।।

दीवाली में दीप जलाये,
आंगन में छिड़काया पानी।
सात रंग में भीगी दुनिया
'होली' में छलकाया पानी।।
दूध को घोटा भांग मिलाकर
मस्ती में लहराया पानी।
शरद पूर्णिमा की रातों में
ठंडक से सिहराया पानी।।

भोजपत्र का कागज़ पाया,

धूप में सूखा उसका पानी।

अक्षर ने अवतार लिया फिर,

स्याही बनकर आया पानी।।

भूख प्यास की याद न आयी,

सृजन बना ग्रंथों का पानी।

खोज हुई तो खुदा मिल गया,

भजन हुई संतों की वानी।।

सोना, चांदी, हीरे–मोती,

सब कुछ है बस नहीं है पानी।।

मोटर, गाड़ी, बंगला, बाड़ी,

सब कुछ है बस नहीं है पानी।।

कदम–कदम पर मौत खड़ी है

आँखों में भी नहीं है पानी।।

कल आयेगी यहां कयामत

क्योंकि, आज नहीं है पानी।।

अभी वक्त है, संभल भी जाओ

और बचाओ अपना पानी।

मिलकर सारे साथ आ जाओ

और बचाओ अपना पानी।।

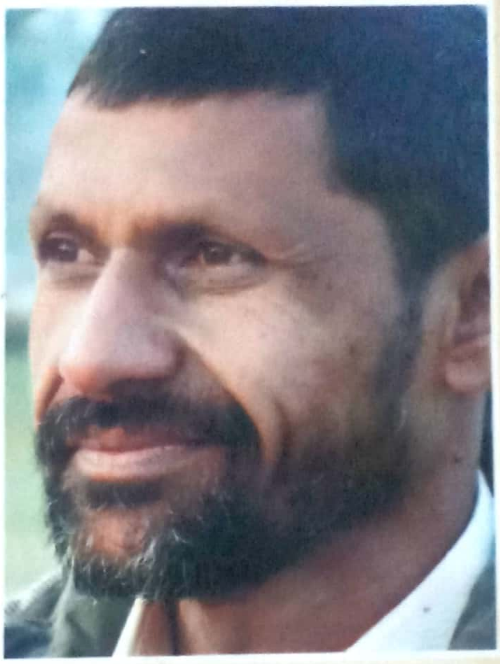
सारे ज्ञानी और विज्ञानी,

दुनिया को समझाओ पानी।

छोड़ दो लालच और मनमानी

साथ चलो, सुलझाओ पानी।।

लेखक-परिचय



उस्मान बेग किसी परिचय के मोहताज़ नहीं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में उस्मान का योगदान सराहनीय है। प्रकृति के प्रति उनकी यह भावनात्मक अभिव्यक्ति ही उनका वास्तविक परिचय है।

जन्म से ही मिट्टी से जुड़े यथार्थ की गर्मी से पके उस्मान में तकनीकी विशेषता से कहीं बढ़कर उनका प्रकृति और मानवता के प्रति अनुराग ही उनकी शैक्षणिक योग्यता है। एक खेतीहर मज़दूर से एक विश्वस्तरीय विकास कर्मी उस्मान अपने आप में एक संस्थान है।

औरंगाबाद के रहने वाले उस्मान न केवल भारत बल्कि विश्व में प्राकृतिक संसाधन विकास के प्रति कार्यरत हैं।

adi
Alternative Development Initiatives

TIMES CREATIONS : 98880 33233